2.2.2.1.3

परदेसिया

(भोजपुरी लोकशैली में रचित गीति-नाटिका)

नन्द किशोर 'कमल'

Collection : Bhojpuri pravasi shramikon ki sanskriti Aur Bhikhari Thakur ka sahity.

जीवन-वृत

नाम	-	नन्द किशोर 'कमल'
जन्म	-	1962 ई0
पिता	-	श्री दूधनाथ सिंह
माता	-	श्रीमती किशोरी देवी
पत्नी	-	श्रीमती मीना देवी
जन्म स्थली	-	ग्राम - विशुनपुर, पो0 - बन्धुछपरा थाना - बड़हरा (भोजपुर)
सम्पर्क	-	रजिस्ट्री ऑफिस आरा, भोजपुर (बिहार) 802301
शैक्षणिक योग्यता-		साक्षर

विशेष सम्मान :

1. जनहित साहित्य सम्मान (वर्ष 2005 में लोकशैली में गीत रचना के लिए)
2. पं0 नागेन्द्र पाण्डेय स्मृति साहित्य सम्मान
   (पं0 नागेन्द्र पाण्डेय स्मृति सेवा संस्थान, अयोध्यापुरी, आरा, भोजपुर)
3. महोत्सवभूषण सम्मान
   (भोजपुरी महोत्सव, 2058 आयोजन समिति, भोजपुर)

लेखक की प्रकाशित रचनाएँ :-

1. कसक (भोजपुरी गीतन के झोरा)
2. परदेसिया (भोजपुरी लोकशैली में रचित गीति-नाटिका)

परदेसिया

(भोजपुर जनपद के लोकप्रिय कवि-नाटककार
श्री नन्द किशोर 'कमल' की लोकशैली में रचित गीति-नाटिका)

जनहित परिवार के संस्थापक अध्यक्ष, श्री नन्द किशोर 'कमल' जी ने विगत 10 दस वर्षों से साहित्य साधनारत कवि है,

यह नाटक भाषा और संवादो में उच्चस्तर के साथ ही किसी उद्देश्य को प्रदर्शित करता है।

पाठको को विषयानुकूल प्रयोग के कारण ग्रामीण नारी की मानसिकता प्रत्येक स्तर पर झांकती है कही-कही संकेतात्मक भाषा का प्रयोग भी किया गया है।

भूमंडलीकरण के इस युग में औरत अब सिर्फ गृहलक्ष्मी न रहकर विश्वलक्ष्मी हो गई है नन्द किशोर 'कमल' जी ने आम आदमी कि तरह औरत को सांस्कृतिक सामाजिक और अर्न्तसंबधो के बीच अनुशासित ढंग से बैठाया है प्रशंग वस कहना नही भूलूँगा जब प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह से प्रश्न किया गया था 'स्त्री की कौन सी छवि लुभाती है आपको'?
जवाब था 'बेटी की छवि' स्त्री बेटी के रूप में सबसे अच्छी लगती है उसके आगे सबसे अधिक मुक्त महसूस करता हूँ।

परदेसिया की चन्द्रकला जब राखी का बंधन बांधती है वही छवि दृष्टान्त बन जाती है टेंगारी सच ही टंगारी द्वन्द्व और संघर्ष के माहौल में जीती है लेकिन आत्मस्वीकृतियों के जरिय जब द्वन्द्व फटता है समान्य ध रातल पर चली आती है। यही नहीं नाटककार की विशेषता हैं स्त्री के बारे में कुछ भी कहने का अधिकार स्त्री को ही समझा जाता है और इस कथन को नाटककार ने बखूबी निभाया है।

बहरहाल इस सभी बखूबीयो से परदेसिया लोक जीवन पर अधारित एक सफल ड्रामा है।

— जगत्नन्दन सहाय
अध्यक्ष, जनहित परिवार, भोजपुर

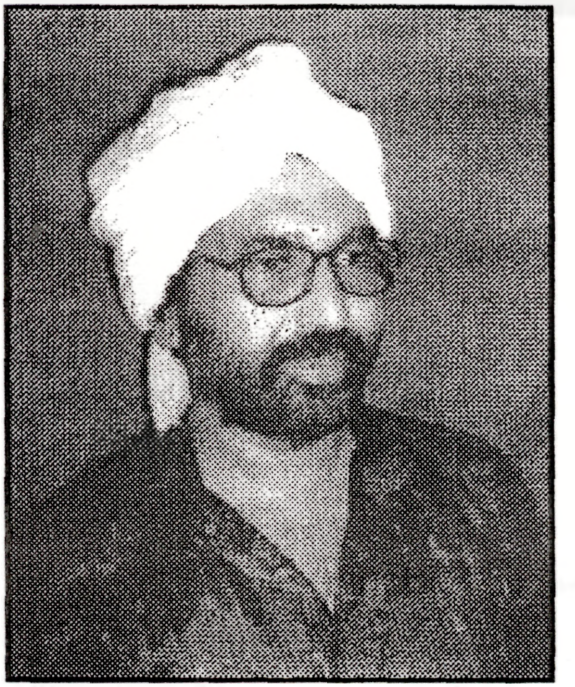

भोजपुर जनपद के सर्वाधिक लोकप्रिय

कवि-नाटककार एवं चर्चित

गीतकार

श्री नन्द किशोर 'कमल'

की सतरंगी आभा बिखेरनेवाली

लोकशैली में रचित

एक सफल गीति-नाटिका

परदेसिया

भोजपुर जनपद के लोकप्रिय कवि-नाटककार, गीतकार
श्री नन्द किशोर 'कमल' की लोकशैली में रचित गीति-नाटिका

परदेसिया

नन्द किशोर 'कमल'

प्रकाशक
जनहित परिवार, भोजपुर
[निबंधन संख्या ११६९/०२—०३]

जनहित परिवार, भोजपुर
भोजपुर जनपद का सर्वश्रेष्ठ प्रकाशक

उत्कृष्ट साहित्य का प्रतीक
कला • संस्कृति • साहित्य

परदेसिया *(लोकशैली में रचित गीति-नाटिका)*

लेखक : **नन्द किशोर 'कमल'**
सर्वाधिकार : लेखकाधीन
प्रथम संस्करण : विक्रम संवत् २०६३ (2005 ई0)
सम्पादक : अतुल प्रकाश
प्रकाशक : जनहित परिवार, भोजपुर
[निबंधन संख्या ११६९/०२–०३]
मवेशी अस्पताल के दक्षिण गली, शीतल टोला, आरा, भोजपुर (बिहार), पिन - 802301
मुद्रक : सपना प्रिंटिंग प्रेस
मवेशी अस्पताल के दक्षिण गली, मानसपुरी, शीतल टोला, आरा, दूरभाष - 238948

PARDESIA
BY - Nand Kishor 'Kamal'

मुल्य : 21/= (मात्र एक्कीस रुपये) विदेशो में 3 $ डॉलर
Rs. : 21/= (Tweenty One Rupees only) In foren 3 $ U.S.

गीति - नाटिका परदेसिया

नन्द किशोर सिंह 'कमल' जी भोजपुर जनपद के भोजपुरी के जानल-पहचानल लोकप्रिय कवि-नाटककार-गीतकार हईं। भोजपुर के माटी अइसन उर्वर बा जे एहिजा एक-से-बढ़िके एक अगड़धत्त साहित्यकार, समाजसेवी, चित्रकार, नाटककार, गीतकार, अपना रचनाशीलता के रंग राष्ट्रीय स्तर पर बिखेरत, सभ्यता-संस्कृति-संघर्ष के सुगंध फैलावत, मानवीय जीवन के गरिमा के बचावत, जीवन के रंचमंच प आवेलन, आपन पार्ट अदा कइके, पर्दा का पीछे ग्रीन-रूम में लवटि जा लन। ओह शानदार परम्परा के कड़ी के आगे बढ़ावत गीतकार 'कमल' जी गीति-नाटिका परदेसिया के रचना कइले बानी। एह गीति-नाटिका के विषयवस्तु बा जे आजुओ बिहारी समाज के शिक्षित बेरोजगारन के अपना राज्य में रोजगार के पर्याप्त अवसर नइखे। ओकरा प्रतिभा के अपना राज्य-व्यवस्था में सदुपयोग नइखे। पहिले रोजगार खातिर ओकरा पूरब यानी कलकत्ता-आसाम से लेई के वर्मा-रंगून तक जाये के पड़त रहे। आजुओ पंजाब, गुजरात, मुम्बई जाये खातिर ऊ अभिशप्त बड़ुए। घर के पुरूख जब परदेस जाई, त घर में एगो शून्य पैदा करी। घर के शून्यता में एगो उदासी पसर जाला। इ घर के उदासी एगो तनाव पैदा करेला। मनई के मन में द्वंद्व पैदा करेला। एह द्वंद्व से पारिवारिक सामाजिक रिश्ता प्रभावित होला। 'कमल' जी के गीति-नाटिका में टेंगारी नाम के एगो सामान्य भोजपुरिया देहाती युवती बिया जवन मैट्रिक तक शिक्षित बिया अपना पति भोंचड़ के जे भोजपुरी भाषा में एम0 ए0 कइले हवन, के धनार्जन खातिर 'परदेस' जाये बदे उत्प्रेरित कर रहल बिया। विकास खातिर सपना देखल आ योजना बनावल जरूरी होला। सपना मनई के कल्पनाशील बनावेला। कल्पनाशीलता सृजनशील बनावेला। टेंगारी भोंचड़ के बहुत समझावत बिया। ओकरो मन में मोटर गाड़ी प चढ़े के अरमान बा। सुंदर साड़ी में मोटर प चढ़ि के उ नइहर जाई, लोग के देखाई जे ऊहो केहू से पाछे नइखे। बहुत समझवला-बुझावला प भोंचड़ सूरत चलि जात बाड़न। नाटिका में कमल जी नूतन यथार्थ के पकड़ ताड़न जवना में स्पष्ट बा जे गुजरात के अइसन औद्योगिकरण भइल बा से इंजीनियर बने के होखे त ओनिये जाई, कमो पढ़ल-लिखल बानी त ओहिजे किछु भेंटाई। पहिले बिहार-यू0पी0 में पूरबी खूब गवात रहे। पूरबी में घर में पिया के बाट जोहत प्रिया के हृदय के दर्द रहे। अब ऊहे पिऊ सीधे पछिम भागऽत बाड़न आ सूरते-बड़ौदा में जाइके दम लेत बाड़न। 'कमल' जी एह नयका आर्थिक यथार्थ -सामाजिक राजनीतिक इतिहास लिखल जा सकेला जदी साहित्यिक

रचना अपना समकालीन समय के रंग के उकेरे में सफल होखे। गीति-नाटिका में 'कमल' जी आजु के मनई के उपभोग क मानसिकता क बड़ा सूक्ष्म ढंग से देखावत बाड़न। टेंगारी भोंचड़ के खाली कमाये-खाये खातिर नइखे सूरज भेजल चाहत। ओकरा मन में वैभव के प्रदर्शन के दमित इच्छा बा। पूँजीवादी समाज में प्रतिष्ठा तबे मिली जब धनशक्ति होई। लक्ष्मी अरजल बहुते जरूरी बा। सरस्वती होखसु भा मत होखसु कार प चढ़े खातिर धनबल चाहीं। ध न के भूख पति-पत्नी के धुरी के तुड़ देत बा। एगो पहिया बिहार में, दूसर पहिया गुजरात में। बताई गाड़ी कइसे चली। नाटिका में पहिला द्वंद्व बा जे पति के पइसा कमाये खातिर परदेस जाये के चाहीं कि ना जाये के चाहीं। इहे द्वंद्व नाटिका में गतिशीलता पैदा करत बा। एह द्वंद्व के जब समाहार हो जात बा त अचानक नायिका के मन परदेस गईल नायक से दूरभाष प संपर्क करे के होत बा। अब मोबाईल के जमाना आईल बड़ुए। मोबाईल के दोसरा छोर प भोंचड़ के जगहा स्त्री के स्वर सुनि के टेंगारी के मन में भेद उपजऽता। नायक कवनो अऊरी स्त्री के जाल में फँसि गइले। एगो द्वंद्व फिर पैदा भईल। एह द्वंद्व के समाहार सुखांत बा आ नाटिका के कथा के अंत। दोसरी स्त्री नायिका के ननद ह यानी नायक के बहिन।

गीति-नाटिका परदेसिया के कथा-भूमि बिहार के भोजपुरी इलाका बा। एह कथाभूमि के विस्तार समुचे बिहार हो जात बड़ुए। कवनो सार्थक रचना अपना कथाभूमि के सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक विकास के आईना होला। 'कमल' जी के गीति नाटिका सत्ता के ध्यान एह ओर आकर्षित कर रहल बिया जे राज्य में शिक्षित युवकन का सामने रोजगार क समस्या बा। राज्य के समुचित आर्थिक विकास कईके प्रतिभा के पलायन रोकल जा सकेला। मानवीय श्रम के बिहार राज्य से ट्रान्सफर हो रहल बा जवन एगो बहुत बड़ सामाजिक-आर्थिक क्षति बा।

गीति-नाटिका के संरचना में एक ही अंक बा। एक से अधिक दृश्यन में मंचन क सुविधा खातिर नाटिका के विभाजित कईल जा सकत बा। वैसे नाटिका के मंचन बड़ा सहज होई। पात्रन क संख्या सीमित बड़ुये। वेश-भूषा के काम सामान्य वेश-भूषा से चल सकेला। सूत्रधार के नाटिका में बार-बार प्रवेश बा। 'कमल' जी के शायद इ पहिल नाटिका ह जवन के भरपूर स्नेह आ आशीर्वाद मिले के चाहीं। गीति नाटिका परदेसिया के सफलता के हम कामना करत बानी।

तथास्तु !

28.5.2005

-जितेन्द्र कुमार
मदन जी के हाता,आरा-802301

सूत्रधार (विषय-प्रवेश)

हमनी के समाज में रोपेया ऐनक हो गईल बा। जेकरा जतीना जादे तिलक, दहेज, मिली ओतने बड़का इज्जतदार कहाई, आ गिनल जाई बरका? ई बात आज माप-तउल के (काटा) तरजूई हो गइल बा।

एही बीच भोचर आ टेंगारी के बिआह बड़ा-धुम-धाम से भइल। भोचर "भोजपुरी" में एम0 ए0 कईले रहन, आ टेंगारियो मैट्रिक पास कईले रही।

टेंगारी लेखा सुघर-, सुसील, मेहरारू, भोचर के मिलल रही। बड़ी भागसाली रहन भोचर। समय बड़ा लहालोट में बितत रहे, तवने दिन-

सांझ के खाये के बेरा भोजन पर टुट के परल रहन भोचर, ओही घरी टेंगारी सवाल खाड़ा कईली? घर-गृहस्ती के काम कईसे चली? खरचा जादे बा, आ अमदनी कम। एह से रउरा बाहर कमाये जाये के चाहीं?

भोचर समझवलन कि तू ठीके कहत बाड़! गुजरात जाये के सोचते रहीं, वोहीजे चाचा जी रहेलन। टेंगारी बड़ी गिल (खुस) भईली। आ कहे के का रहे, जवन ना कहे के, तवने कहीये नू देली करेज के उदगार। का कहीं जी। हमार सखी लोग के ठाट-बाट आ सान-सउकत, महल, अटारी, घोड़ागाड़ी, गहना-गुरीया, नोकर-चाकर देख के हमरो मन करता कि हमनीयो के अपना नईहर; एही ठाट बाट से चलती जा। हमार असरा पुराईब नू।

भोचर भरोसा दिआके सुख-चैन से रहे लगलन। बाकीर टेंगारी उनका के रोज-रोज बाहर जाये के (उदबेगे) लगली अब आगे देखीं।

भोचर के साधारण घर, में संस्कार झलकत रहे, सामने माँ सारदा, पारबती, गणेश, महेश, अवधेश, सहित लखन, कृष्न, राधा, कृष्णा। सभे के फोटो टांगल रहे, सूरूज भगवान आ सोखो बाबा के फोटो रहे।

श्री गनेस अरूपारबती के पूजा करीं महादेवा जी।
राधा-कृष्णा अरू रामलखन हिये बसत सीया जी।।
ठईंये सोखा-सूरूज बिराजे बसहूँ देव मोर हीया जी।
आरती देखावत दूनो बेकत थारी में जरे दिया जी।।

जुगल सुमिरन

हे गणनायेक, विघ्न बिनायेक,
महादेव संग पारवती माई।
राम-सिया हनुमान लला,
राधे-कृष्ण, रघुनन्दन भाई।
गुरु चरनन के रज-कण
लेत "कमल" नित सीस लगाई।
भगवान सरण निज दास कहे
किरिपा करीं काहे देर लगाई।

(कोरस)

भोचर-टेंगारी आगे बोलीहें

(पीछे से सब पात्र)

मन श्री गंग, महादेव, भवानी।
श्री चरनन में सीस नावत बानी।।
राम लखन रिपु-सूदन नामा।
बैदेही सिद्ध करहूँ मम कामा।।
नभ, जल, जग, जीवन है मोरी।
सरन 'कमल' कहत कर जोरी।।
बन्धु नाटक करन मन करना।
देई किरिपा करि राखहू सरना।।
करत 'कमल' भोजपुरी परचारा।
सामिल अष्टम सूची संविधान क धारा।।

सूत्रधार

रामा गणनायेक के करि परनामा, रामा हो रामा।
रामा सीस नवावत सुरसती चरना, रामा हो रामा।
रामा होखी सहाय कलमपरि आवा, रामा हो रामा।
रामा अजब रिवाज अब बिगरल जाला, रामा हो रामा।
रामा तिरिया कहे स्वामी जाई बहरा, रामा हो रामा।

रामा भेजब रोपेया भेजबि लहंगा, रामा हो रामा।
रामा सुख सुविधा के होई बरीसा, रामा हो रामा।
रामा गोड़ तोर परिला, सईया गोसईया, रामा हो रामा।
रामा अबिमति बरिजि मानली अरजी, रामा हो रामा।
रामा पोस्ट बन्धुछपरा बिसुनपुर ग्रामा, रामा हो रामा।
रामा जिला भोजपुर थाना बड़हरा, रामा हो रामा।
रामा कमल नाम बसे गंग निज सरना, रामा हो रामा।
रामा विषय-विवेक गुरु के चरना, रामा हो रामा।
रामा सुनहूँ विनय सज्जन चितलाई, रामा हो रामा।
रामा कारज सफल करिहे रघुराई, रामा हो रामा।

सूत्रधार के वार्तिक

एह बदलत समाज में हमनी के बानी। ओकरा पीछे ई बदलत समाज के तसवीर (फोटो ह)

सूत्रधार के वार्ता

माई बदल गईली, जाई बदल गईली,
गाई बदल गईली, दाई बदल गईली।
लुगाई बदल गईली, भौउजाई बदल गइली,
खुदाई बदल गईल कमल गंगा माई बदल गइली।

आसमान बदल गईल, अरमान बदल गईल
इंसान बदल गईल संतान बदल गईल।
भगवान बदल गईल 'कमल' ईमान बदल गईल
हवा-पानी बदल गइल, आदमी आ इंसान बदल गईल।

श्रृंगार बदल गईल, इयार बदल गईल।
सरकार बदल गइल, एतबार बदल गईल।
सरदार बदल गइल, संस्कार बदल गईल।
कहत 'कमल' अब तेल आ तेल धार बदल गईल।

पुनः सूत्रधार

आज समाज में सभ-कुछ बदल गइल बा। कोई कवनो रिस्ता के तुर के चकनाचुर कर देत बा। इहाँ तक कि भाई-बहिन के रिस्ता पर अंगुरी उठता। अब देखीं, समाज में सभे के पेट बा। आ इहे हमनी के सभ नाच-नचवले बा।

पेटवे ना होईत, कलेसवे ना होईत।
रउआ हमरा इहवाँ भेटवे ना होईत।।
ना केहू राजा रहित, ना कोई भिखारी
ना कतहूँ बेवस कोई, ना कही लाचारी
बड़-छोट जोखेवाला नोटवे ना होईत।
रउरा हमरा इहवें भेटवे ना होईत।।
ना कहीं भूख रहित, ना कहीं दुःख रहित
ना सब कुछ बुक रहित, ना कही हुक रहित
आटा, नीमक, चाउर तेल के रेटवे ना होईत।
रउरा हमरा इहवाँ भेटवे ना होईत।
ना केहू माई-बाप-ना कवनो अता-पता
ना केहूँ नेता-मंत्री ना कवनो सता-भता
कमल जाति धरम कहा बेटवे ना होईत।
रउरा हमरा इहवाँ भेटवे ना होईत।।
ना कहीं झूठ रहित, ना कहीं ठूंठ रहित
ना कहीं लुट रहित ना कहीं भूत रहित
समझेवाला हीया में करेजवे ना होईत।
रउरा हमरा इहवां भेटवे ना होईत।।

टेंगारी के वार्ता

हे प्राण नाथ :- (भोचर बइठल बारन)
सखियन के देखि-देखि लजाई जाला जियरा
कि छतिया प लोटेला साँप।
असरा पुराईबि हमार, रउरा ए जीवन-साथी
राउर नाम होईहे अपने आप।।
नोकर-चाकर, महल-अटारी
लवहर लागि कहि महरानी

आचर कुंजी देखि बिचारी
इनकर चले इहे सभे जानी।।

वार्ता - ऐ जी रउरा बहरा जाये में, अतिना, काहे डेरात बानी।
दु:ख दलिदर दूर हो जाई, हीया के हिलोर के जानी।

भोचर के वार्ता

मानत बात तिहारी प्यारी, मन में उठत बा संका।
तिरिये 'कारन' बनली हो प्यारी, जर गईल सोना के लंका।।
करम के लिखल टरी ना प्यारी, करेलू अतिना निहोरा।
जागल जमीर जोरू के प्यारी 'कमल' पूरईहन रहि ना कोरा।।

भोचर के वार्तिक

अब देखत बानी रउआ सभे जी। मुँह से निकलत देर भइल। त बस अवहीए मनिआडर हो जाई। आरे कहत नू बानी कि जाईब, त जाईब। हो गइल। भोचर बइठ जात बाड़न। तनी सोचे- समझे द।

टेंगारी के वार्ता

सोचते ई बितिहन उमरिया, नाथ बिनती मोर मानी।
कहत 'कमल' छोड़ी घुड़मुरिया, नाथ राखिलिं मोर पानी।।
उठत हीया में बुजबुजिया, बहत बेयार उर जानी।
पथ रखिहे बंसुरी गिरधरिया, गिरल सरणिये में बानी।।

सूत्रधार

अब आपन अंतिम बाण टेंगारी, भोचर प छोड़त बारी।
गावत गीत सुनावे-रिझावे पिउ के, मति के फेरिहे मुरारी।।

टेंगारी के गाना

मानऽ हो राजा, कहना हमार तनी।
कहना हमार तनी 3
जान हो राजा उलहना हमार तनी।।
जब राजा जी भेजबि मनिआडर
रोपेया कारन चली हमरे आडर
होईहें नाम अवरि इज्जत राउर बनी।
मानऽ हो राजा कहना हमार तनी।।
भोचर के झकझोर के
काहे बहिर हो गइल बानी।

भोचर के वार्ता

बेयाकुल करि दिहलू मोर मनवाँ
कहे 'कमल' धन दुःख कारखानवाँ।।

भोचर के गाना

सुन-सुन धनियां हो हमरी बचनियां हो
काहे छलनी करेलू करेज मोरी धनिया।।
निक, रहे, ठीक रहे
घर संसारवा हो
मनवा मे बड़ी उठे पीर मोरी धनिया।
हीर के पीर ई
हियरा घसल बा हो
चीरी-चीरी-हीयरा खखोरलू मोरी धनिया।
कहत कमल जहवां
सुखेला विमल जल हो
धन-दउलत माटी होई जाई मोरी धनियां।
काहे छलनी करेलू, करेज मोरी

पुनः भोचर के वार्ता :-

प्यारी टेंगारी धन-दउलत, कछु काम ना अईहे।
भरल खजाना कमल संगे कछुओ ना जईहे।।
कतीना सुनर जिनगी जियत दूनो प्राणी जी।
लागता बा लिखवइबे करबू जीनगी के कहानी जी।।

टेंगारी के वार्ता

तनी सुनली कहल हमार, पद सीस नाईला बार-बार।
करजोरी, बहोरी विनय करी, पार लगईहन खेवनहार।।

पुनः टेंगारी के वार्ता :- गाना

सईयां मन करे चली, मोटर कार में।
रोपेया भेजी दिह घुमब बाजार में 2
खाना खाईब गंगा तीरे घुमब बाधार में।
सईया मन करे चली मोटर कार में।।

सुबह होई कासी, पिया पाप सभ नासी 2
रात बिताईब बैसनव माई दरबार में।
सईया मन करे चली मोटर कार में।।

भोचर के वार्ता

प्यारी टेंगारी बात सूनो, चित लाई मोरी धनियां।
सकल पूजही सभ कामना, तोरी मोरी प्यारी रनिया।।
होईहे सहाय प्रभू सभ सुख के, बरखा बरसी पनिया।
कहतू रूक जा अबही से, अइलू नयी-नवेली कनिया।।
होइहन सहाय नाथ, दीनानाथ अवरू धनुधरियां।
साथे-साथ सोहे गंगा, भूतनाथ बएल-असवरिया।।

भोचर का गाना

काहे करत बाड़, अतिना मन-मानी।।
तोहरा के हम दिल के रानी। मानी 2
अवरू मानीला दिलवर जानी।
काहे करत बाड़, अतिना मन-मानी।।
कहत 'कमल' कछु काम ना अईहें 2
रहि जाई नामी-बेनामी।
काहे करत बाड़, अतिना मन-मानी।।
धन-दउलत मिलि जईहें ना मिलिहें जवानी 2
परती परल रहि जाई रानी जीवन के कहानी।
काहे करत बाड़, अतिना मन-मानी।।

पुनः भोचर के वार्तिका

सभ मिल जाई। बाकिर ई समय, जवन बीत जाई फेरू उ कबहूँ मुर के वापस ना आई। एही से कहत बानी कि हमरा बात पर धेयान कर।

टेंगारी के वार्ता

धरम के मेहरी राउर, नाथ साथ मोरी दीजै।
सकल कामना पूरनकरि, सुधी मोरी लीजै।।
अरजी करिला बरूए, मरजी तिहारी जी।
रखिहन लाज मोरा गोकूल कृष्णा बिहारी जी।।

टेंगारी का गाना

काहे घरे बईठल, करीला नादानी।।
देस-दुनिया घुमब, बुद्धी बढ़ जानी 2
रोपेया बिनु होत बाटे, रोजे हलकानी।
काहे घरे बईठल, करीला नादानी।।
कोठा-अटारी होई, रंग-रंग के गाड़ी 2
छने-छने साड़ी बदलब, बनब महरानी।
काहे घरे बईठल, करीला नादानी।।
कहत "कमल" दुनिया रउरे के जानी 2
सगरे बड़ाई लोग, कही खानदानी।
काहे घरे बईठल, करीला नादानी।।

रउरा काहे नइखी मानत ।
मन में असरा भरल पदारथ।।

भोचर के वार्ता

मन अब हमरो फड़कत बडुए।
हीया में हलचल लड़कत बडुए।।
का कहीं, हम करम के बाता।
जोड़ल सनेह अब टुटल जाता।।
हे भगवान गेयान तनी दिहीं।
तिरिया के कुसलक्षेम तनी लिहीं।।
हे अवधेस तू राह दिखाव।
कुल-खानदान के इज्जत बचाव।।
अब त जाये परी देस-परदेस।
तिरिया के तबे मेटी कलेस।।
देवन के देव महादेव सहाई।
गाँव-घर कुसल रहे सभ भाई।।
कहत 'कमल' करजोर गोसाईं।
मंगल कारज हरि होहूँ सहाई।।

टेंगारी के वार्ता

साथ दूई कप चाय मंगवाई।
चुसकी लेत मने-मन मुसकाई।।
बोली बचन कर जोरी मृदु बानी।
अग्या होत हरषत हिय जानी।।

पुनः टेंगारी क गाना

राजा कहतीं त, करबि तईयारी।।
देखी अतूल बाबा, तनी जात्रा बिचारी 2
पश्चिम के सुभ दिन, होखे हितकारी।
राजा कहतीं त, करबि तईयारी।।
सुरत-गुजरात जइहें, स्वामी हमारी 2
मिली जाईत धन गाड़ल, जहाँ बड़ भारी।
राजा कहतीं त, करबि तईयारी।।
कहत 'कमल' सुनीं, अरजी हमारी 2
सुभे-सुभे रहि जहवाँ बलमा अनाड़ी।
राजा कहतीं त करबि तईयारी।।

सूत्रधार- के वार्ता

तेही अवसर अतूल प्रकाश तहँ आवा।
देखत टेंगारी-भोचर सीस नावा।।
देत असीस पूरन मन-कामना।
बोली सुमुखी आदर सन-माना।।
देखत महावर पंडित मुसकाई।
भाग्यवती पुत्रवती हो प्रभू सहाई।।
अतूल प्रकाश मुख निज मन माहीं।
पूरन कामना हो पुत्री जौ मन ताही।।
पुत्री पुण्य काज है बहू तोरी।
आसीस धन-जन बाढै फुलवारी।।
बरिषा असीस नहाई टेंगारी।
धन्य-धन्य भाग्य मोर खारारी।
नाम अतुल मोर जनहित कामा।

सपना प्रेस सीतल टोला निज धामा।।
आरा नगर थाना, जिला भोजपुर खासे।
पता बतावस, ग्राम बिसुनपुर पासे।।
पुत्री चला निज हरिहर धामा।
फले, फुलाये, फहरत सभ कामा।।
योग-वियोग लिखात मृदु वानी।
अनुष्ठान खोजत छट्ठी महारानी।।
सुभ जौ-जौ हो, पूरे निज कामा।
सो सभ जतन करू गुरु नामा।।
बचन पूरण मय गेयान निज दिजै।
अहो भाग्य मोरी खुदे परीक्षा लिजै।
सत्य सत् तोरी पुरवस पुर देवा।
गणनायेक मातु-पिता महादेवा।।

अतुल प्रकास के वर्तिका

पुत्री सुभ लगन सोमवार दिन। सुबह के पह-फाटे के पहिले, ब्रहम-मुहुरूत में 4 (चार) बजके 13 तेरह मिनट 5 (पाँच) डंड तक, घर से निकल जाये के बा। समपूरण कारज सिद्धी बा जजमानिन।

आह! जजमानिन ई मुहुरूत ह अइसन कि ऐह योग खातीर-नेता, अभिनेता लोग हमरा बात पर साल भर इंतजार करेला लोग। आ जजमानिन अतिने ना एकरा खातीर बाबा के एकईस हजार एक भा एकावन हजार एक उ लोग बाबा के गोड़ पर पलक झपकते रखेला लोग। बाकिर जजमानिन काहे दो हमार मनवा तोहरा के अतिना मानेला कि, छोड़-जाय द इ सब बात। सभ समय से करीह। कल्याण होई। हर-हर महादेव।

भोचर के गाना

तोहरी बचनिया मानी, प्यारी धनिया हो।
जाईला हम परदेस जी।
निके-निके रहीह रानी, प्यारी धनिया हो
मनवां में रहेला कलेस जी।
तन दूई एके प्राण मानी, प्यारी धनिया हो
लागत बा पग-पग प ठेस जी।
कहत 'कमल' पथ-पानी नाथ रखिहे धनिया हो
तोहार सत् राखसु महेस जी।

सूत्रधार- का वार्ता

भोचर के जब देखली ह, डब-डबाईल अखियाँ।
करत तईयारी टेंगारी के निरखत निज फाटेला छतियाँ।।

सुनी के भोचर के बात, जियरा उछल-उछल जात।
हीयरा हुलसी-हुलसी जात, सभ देव मन ही मन-नेवतात।।

सूत्रधार- का वार्ता

भोचर के जब देखली ह, डब-डबाईल अखियाँ।
करत तईयारी टेंगारी निरखत फाटेला निज छतियाँ।।

सुनी के भोचर के बात, जियरा उछल-उछल जात।
हीयरा हुलसी-हुलसी जात, सभ देव मन ही मन-नेवतात।।

पुनः टेंगारी का वार्ता गाना :-

देवन के देव होखी, महादेव राखी रोखी
सभ देव सहाई होईहे ए बलम जी।
गाँव गंग के तीर, बिहसत रहे रघुबीर
धाम निजे ह बिसुनपुर गंईया ए बलम जी।
मंदिर दुर्गा, हनुमान, सभ कर गंगा निज धाम
दरगाह पर सीस नवईह ए बलम जी।
कहे 'कमल' काराचुर, जिला खासे भोजपुर
थाना बड़हरा के निजे बसईया ए बलम जी।
हवे निपटे गवाँर, कर जोड़े बार-बार
छठी मइया असरा पुजईहे ए बलम जी।

पुनः टेंगारी के गाना

बान्ही के पगरिया पिया धइलन रेलगड़िया हो
नजरिया लागे ना।
पिया भइल परदेसिया हो
नजरिया लागे ना।।
करत मसखरिया गइले, गुजरात के नगरिया हो

नजरिया लागे ना।
देखस घुंमि-घुमि बजरिया हो
नजरिया लागे ना।।
धोती, कुरूता, जाकिट, हाथे सोभेला छतरिया हो
नजरिया लागे ना।
मीठे करेलन अरजिया हो
नजरिया लागे ना।।
पतियो ना भेजे नाहीं, लेवे कवनो खबरिया हो
नजरिया लागे ना।
फेरी लिहलन अपनी नजरिया हो
नजरिया लागे ना।
कमल भइलन कसूर वरिया, हीयरा उठेला लहरिया हो
नजरिया लागे ना।
सुनीला लागल लहबरिया हो
नजरिया लागे ना।।

पुनः टेंगारी के वार्ता

दिन बितल मास प मास, अवरू अब त सालो-साल।
दिन गुणी, रात चुनी, भेजला के अब उठतऽ बा मलाल।।

डाकियाँ के वार्ता

केकर हउवे टेंगारी देवी नामा
गुजरात से आईल सुभ पयगामा।

टेंगारी के वार्ता

देवी टेंगारी हमरे हौ नाम
पिया परदेस गये निज काम।
का? ले आईल बानी सनेस
निके सुखाद करिहे खागेस।

डाकिया वार्ता

देवी एकहूँ रजिष्ट्री आवा
दउरत-भागत दुअरा निज धावा।
सही आप-अपने कर दिहऊ
अनपढ़ होय ठेपा तह करऊ।

पुनः टेंगारी के वार्ता

ए भइया हम मैट्रिक बानी
बिना पढ़ले कईसे केहूँ गेयानी।
कागज पर दसखत निजे बनाई
चिट्ठी पढ़ते मन निज समुझाई।
सोस्ती लिखा है प्यारी टेंगारी
बेवसाय बढ़े दिने-दिन बड़-भारी।
भेजत हौ दस लाखा हुण्डी
खरचे खोल गेयान के कुण्डी
पुरईहन आस तोहार महेस
'कमल' पुजस निसिदिन गणेस।
कम लिखत में जादे बुझीह
लेन-देन में मति तूँ जुझीह।

सुत्रधार-वार्ता

तेही अवसर आयो अतुल प्रकास
संका दूर भयो साफ लागै अकास।

अतुल प्रकास के वार्ता

पुत्री दस लाख धन ना होय थोड़ा
प्रथम गृही सुख मन मह तोड़ा।
महल, अटारी, गाड़ी सभ अभिलाषा
नाम-दाम, देव, देत सकल परिभाषा।
देवी देत दुरभाष कर भाई, बात करहूँ हिये हरषाई।
अबही रोपेया बरूए पाई, हमरा समझ से अवरि आई।
(इहा दुरभाष के भाई से प्रयोजन बा मोबाईल से)
सुमुखि जतन करो चितलाई
नाहि त ऊ दिही बिसराई।
हर-हर, बम-बम गइले बाबा पुर गाँवा
बात कवनो त बटन दवईह हमरे नावा।

सूत्रधार :- के वार्तिका

मोबाईल मिलते टेंगारी के उद्वेग लेस देत बा, सब काम निपटा के मोबाईलवा के बटाम जसहीं टेंगारी दबईली ह-

हैलो ..... मैं गुजरात से चन्द्रकला बोल रही हूँ।

टेंगारी - हूँ ..... (औरत के आवाज सून के उनका धक्का लागत बा फिर भी साहस जुटा के)

चन्द्रकला जी मैं भोचर से बात करना चाहती हूँ मैं बिहार से बोल रही हूँ टांगारी।

चन्द्रकला- टांगारी, भोचर जी। ओ नो-नो यहाँ कोई भोचर-बोचर नहीं रहता है (लाईन काट देती है)

टांगारी - हूँ.....(लाईन कटते नागिन अस फुफकरली आ मोबाईल के उलट-पलट के देख के रख देत बाड़ी चेहरा उत्तर जात बा)

गाना :

गरमी बिती गईले, जाड़ा कटि गईले
अईले बसंत के बहार परदेसिया।
पिऊ पपीहा बोले, पिंजरा में सुग्गा डोले
पिपरा के पात अस डोले मन परदेसिया।
कोईली बोलेले बाग, हिया में धधके आग
धह-धह बदन मोर जरे परदेसिया।
बेधे बसंती बेयार, कहुके जिया हमार
छने-छने ईयाद हमरा आवे परदेसिया।
आम मोजराई गईले, महुआ कोचिअईले
खेत खरिहान गदराईले परदेसिया।
ईयाद आवे राउर बात, जिदवे में भइल घात
कईनी में बड़की हम नादानी परदेसिया।
रोपेया भरल घर, सभ सुख लागे थोर
कमल बिनु सुख सभ सपनवा परदेसिया।
मन में उठेला हुक: केकरा से कहीं दु:ख
पथ सत् के रखिहन महेस परदेसिया।

सूत्रधार का वार्ता

ना चाहते मन पिउ के गोहरावे लागल
आईल बसंत के बेयार मन बहकावे लागल।
निसबद भइल रात अब सहल नईखे जात हो

सवरू के ईयाद में बेदरदी निनियों उधियात हो।
जिउ नईखो मानत पीउ के चाहे सवगात हो
कहत 'कमल' असरा बा उनके मन कछु ना सोहात हो।

सूत्रधार का वार्ता

टेंगारी - फेर मोबाईल लगावत बाड़ी। फेरू ओने से उहे आवाज .....
चन्द्रकला - मैं चन्द्रकला बोल रही हूँ।
टेंगारी - अतीना सुनते टेंगारी मोबाइल बंद कर देत बारी।

अपने - आप लगी हो बुदबुदाये
चन्द्रकला सब्द सूई हिया गड़ जाये।
मारत बाड़ी मुक्का छाती, असरा में भइल घाती।
चन्द्रकला सुनी फाटे छाती, अब कइसे हम जिऊजातीं।

पुनः टेंगारी का गाना

कईनी कसुर भारी, सईया पकड़लन गाड़ी
फिरीओ के खबर नाहीं लिहले रे संवरिया।
अपने बोअनी गाछ, लागेला कि हई बांझ
दुखवा सहलो अब ना जात रे संवरिया।
टप-टप चूए लोर, कांहे होत नइखे भोर
मोबाइलो से हालवा नाही सुने रे संवरिया।
कवन हम जतन करि, कईसे उनकर मति फेरि
सुद्ध-बुद्ध लेले मोरा गईले रे संवरिया।
कइसे अब रहि पथ, दुनियां में रहि सत्
कइसे अब सम्भारि तोरी थाती रे संवरिया।
कहेलन 'कमल' कंत, काई होई गईलन संत
पगली के गतिया मोर भईल रे संवरिया।

पुनः टेंगारी का (प्रार्थना) अरजी

हे बनवारी सरण तिहारी
राखी लाज हमारी जी।
ब्रहमा, विष्णु, महेस, मुरारी
राखी सरण त्रिपुरारी जी।
कहे कमल मन मह बिचारी
चेरिया खारे दुआरी जी।

सूत्रधार का वार्ता

मंदिर घंटा बाजन लागे।
राम-राम मन भावन लागे।।
आलस में मन अलसाईल।
मन मगज चन्द्रकला छाईल।।
लागत बा दुअरा केहूं आईल।
हर-हर महादेव सुनाईल।।
चिरईं खोता छोड़ पराईल।
खलिहे गोड़ टेंगारी आईल।।

अतुल प्रकास के वार्ता

जय हो जय जजमानिन राउर।
चेहरा काहे भईल बा बाउर।।
कहि द! बात हीय हलुक होई।
जेहि बिधी सुफल मनोरथ सोई।।
किरिपा बा महान रघुबर के।
नावत सीस टेंगारी गुरुवर के।।

टेंगारी का वार्ता

धन-धान से भरल. अटारी।
भरि जल नयन बोली टेंगारी।।
मातु-पिता, गुरु तुमही पुरारी।
परल सरण निज कमल तिहारी।।

योग-वियोग के बाढ़ बढ़िआईल, हीया में उठल आन्ही।
बिनय बेकार मन में गढ़ुआईल, बईठल सवतीन गेरूढ़ बान्ही।।

अतुल प्रकास के उपदेस

योग-वियोग सभ के खण्डन।
अनुष्ठान सूरूजमल के बन्दन।।
योग-योगिनी सभ जुटल जोग।
दु:ख कष्ट सभ भगीहें रोग।।
कुल देवता सोखा के पुजो।
मन मह भासकर और ना दुजो।।

हर-हर महादेव बोले बचना।
सकल मनोरथ पूजे सभ रसना।।
गुरु के बचन गुणे मन माही।
पुरन करे विधी सभहियताही।।

अतूल प्रकास का जाना टेंगारी के बिरह गीत

पछेया बहेला बड़ जोर
खोरे-पोरे-पोर।
चितवा दउरेला जस घोड़
खोरे-पोरे-पोर।
जारा कटली हो गरमी रटली
करेला जोबन बरजोर
खोड़े पोड़े-पोड़।
उठल लहरिया हो सहीला कहरिया
लोरवा ढरेला हरहोर
खोड़े-पोड़े-पोड़।
रेड़ फुलाला बड़ेर दहाला
दहि गइले असरा करोर
खोड़े-पोड़े-पोड़।

सूत्रधार

खुलल गेयान के गगरी
बदल गइल जिव के नगरी।
लागल छट्ठी मईया में लगन
भइली तन मन भास्कर में मगन।
करेली पूजा के तईयारी
मन से भागल बेबिचारी।
पीयर लूगा हाथे जोड़ा कलसुप
गुरुबचन अनुष्ठान भास्कर भूप।
तन-मन तेज पहूची गंगातीर
दरद सभ कहते वहे निरे-नीर।

पुनः सूत्रधार

गंगा माई के उचि रे दरबरिया
तिरिये एक रोवेली हो।
ए गंगा मईया अपनी लहरिया
मोहे देतू त डूबी-धसी जइती नु हो।
किया तोहे धियरी नइहरे दुःख
किया तोर ससुरे दुःख हो
ए धियरी किया तोरे कंत विदेस गइले हो।
नाही मोर गंगा मईया नइहरे दुःख
नाही मोर ससुरे दुःख हो
ए गंगा मईया कंत मोरा परदेस गइले हो।

टेंगारी का अरजी

छोटी-मोटी सूरूज दुलरूआ
मति जईह ससुराल।
के लिहे पिढ़वा से पनिया
के जुड़-पान।
सासु लिहे पिढ़वा से पनियां
सरहजिया जुड़ पान।
सेज के सुहागिन ए अम्मा
पलंगा डसाय
तुड़ीना किरिअवा सूरूज मल
'कमल' हरषाय।

सूत्रधार का वार्ता गाना

[टेंगारी दियरी जरावत बाड़ी परबईतिन के भेष में]

सांझ भइल छट्ठी मईया रहबू में कहवां।
रहब में रहबो भोचर जी के अंगना।
गाई के गोबर निपावल होला अंगना।
घीऊआ के दीयरी जरावल होला अंगना।
जोड़ा कोसी भरावल होला अंगना।
जोड़ा कलसुप सजावल होला अंगना।
सांझ भईल छट्ठी मईया रहबू में कहवाँ।।
रहब में रहबो भोचर जी के अंगना।।

पुनः सूत्रधार के वार्ता

अब सती सचहूँ में धईली ह पति के धेयान में
अच-कचाई भोचर उठलन देखि के सपना बिहान में।
दिवस मास अइसे बिते जईये लागल बा पंख
आईल देखि फेरू होत राखि पुजन बाजत बा संख।।

टांगारी के एहीजे रोकी कहानी
भोचर के आगे के सुनी जुबानी।
अचके निन टुटल भोचर के
अंगना निपल देखालन गोबर के।
घंटी बाजते चन्द्रकला तहँ आई
एस0 सर0 एस सर बोली सिर नाई।

भोचर - चन्द्रकला डीयर कम हीयर
प्लीज-प्लीज कम नीयर।
कमिंग माई फोन गिभ मी लिस्ट

चन्द्रकला - लाफिंग प्लीज टेक दिस एंड लिस्ट।

भोचर - ओह! थैंक्स।

भोचर - देखत नाम जसही टांगारी
हिय बीच टीस उठल बड भारी।
पियास बुझावत बोले समुझाई
चली देखन चन्द्रकला हरषाई।
नाम टांगारी बिसुनपुर गावा
अबही चलहूँ देखन निजधावा।

सूत्रधार का गाना

चलत डगरिया में मिलले बजरिया से
गहना के करे मोल-भाव परदेसिया।
देखेला मांग के टीका झाला-झुमका बलिया से
हार-हसुली, सिकड़ी कंठाहार परदेसिया।
नथियां, नथुनी, छुछी अवरू नकबुलवा से
कृष्णाचुर लेला वोजनदार परदेसिया।
हाथ संकर, बाला, बाउटी खासे मुनरिया से

डरकस, पहूचा, ग्लहल लहरदार परदासया।
बिछिया बेसहलक लरछा, पायेलिया से
सारी बनारसी बुटीदार परदेसिया।

पुनः सूत्रधार के वार्ता

मास दिवस सावन रहे, पावन राखीबंधन के पर्व
आस पुराई गायी गोहार के कटीहे बंधन देव-गनधर्व।
रनियां सजनियां के फरकल बदनवां
कि अचरा उड़े असमान।
फुफुटी जे फरकल, खनकल कंगनवां
कि असरा में परल बा परान।
किया सईया अईहे हमरी अंगनवां
कि सगुन के करस अखियान।
चरण-सरण कमल पुजीहे अरमनवां
कि असरा पुरईहे भगवान।

पुनः सूत्रधार

ताही समय चम-चमात गाड़ी एक आवा।
जिव वियोग के गरमा-गरम रहे तावा।

टांगारी का वार्ता

(गोर प गिर के)
देखत चरण सिहरत बा रोंया
प्रेम मगन मन फूल।
बहेला लोर के धार-बेसुमार
हिया पईसल त्रिसूल।
संगे नारी सुझल स्वामी
नसाईल तीनो कुल।
सोक-सागर डूबत-उतरात
मन आवे बात फिजूल।

भोचर का वार्ता

(उठावे के कोसीस करत बाड़न)

उठहूँ-उठहूँ प्यारी तिरियवा जे
तूहूँ हमरा बसेलू करेजे हिरनिया।
नारी-सुकुमारी के नाम चन्द्रकाला जे
बोली-बतिआई सहेज ले हिरनिया।
आस धर, सास धर, मान बतिया जे
तोहर पिया रहि गईले भोचरे हिरनिया।
खोली के सुनाव तूहूँ बतिया बताव जे
चन्द्रकला से सुनि ले बेयान हिरनिया।

चन्द्रकला के वार्ता

तोहसे बडुए हथजोड़ी-लिहलू जियरा खखोरी
काहे तोहमतवा से तोपत बारू हमरा के।
बाबा हमार एके रहले, गंगा जी के ढाही ठहले
अछरंग (लक्षण) लगाई भाला घोंपत बारू हमरा के।
भाई मुअली एहवात, बाबू कहलन सभ बात
काहे भोजपुरी से जोड़त बारू हमरा के।
(गुजरात में सभे भोचर के भोजपुरी नाम से जानत रहे।)

पुनः चन्द्रकला के वार्ता

राखी के दिनवा, पावन सावन महीनवां
ढरकल नेहिया के लोर।
भाई-बहिनि के पवितर सनेहिया
बान्हस राखी लूगा फारी कोर।
हम हई तोहरी लहुरी ननदिया
भउजी के लपटाई गइली गोर।

सूत्रधार का वार्ता

मधुर मिलन चितवन लागे, लोग अवरू लुगाई
हिन्दु-सिख रहन ओहीजा निरखत मुसलमान भाई।
हर-हर महादेव सुनते मन ही मन मुसकाई
कहत कमल अतुल प्रकास बिराजे निज तहं आई।

चन्द्रकला का गाना

तुही बार-नाज भईया, रखि लिही लाज भईया
नेहियाँ के बान्ही तोहे ताज हो।
अक्षत, रोड़ी, अवरि फुलवा के माला
दियरी में धधके सनेहिया के ज्वाला
लागे नजर ना भईया तोहरी उमिरिया में
टीका लागाई तोहे आज हो।
जइसे में भउजी के सेनुरा बहुरईल
मनवां के अंगना में फूलवा खिलईल
नेग लेहब हम ना रोपेया, गईया से
लेहब में हम तोहसे ताज हो।

सूत्रधार

टेंगारी चन्द्रकला के धइली ह भरली अकवारी भरजोर माफकरिह प्यारी ननदिया, करि दिहलू कुलवा अंजोर। भाई,बहिनी,भौजाई एक भईल,केहूँ के हीया ना रहल मईल।

सभ पात्रन का आरती

आरती कीजै गंगा महरानी की।।
सुर संकर जटा बिराजनी की।
आरती कीजै गंगा महरानी की।।
सरग धरा जहं संगम सोहत
पूरब सोन निसचल मल धोवत
चम-चम चमकत पाप नासिनी की।
आरती कीजै गंगा महरानी की।।
कंचन थाल कपूर की बाती
'कमल' सेवत तोहे दिन-राती
मंगलमय हो जय जगतारिनी की।
आरती कीजै गंगा महरानी की।।
सेंवत संत, सुर नर-नारी
जग जीवन जन पोसनहारी
जय-जय, जय संगम देब्यानी की।
आरती कीजै गंगा महरानी को।।
भये पुरन परदेसिया कहानी की।
आरती कीजै गंगा महरानी की।।

-: ईति :-